



ऐतिहासिक ग्रन्थोमां स्तोत्र साहित्य – एक अध्ययन Aaitihasik Granthoma Strot Sahitya - Ek Adhyayan

*** Lamba Ajay P.**

*** Government Arts & Commerce College, Paddhary.**

ऐतिहासिक स्तोत्रोमां विभिन्न देवताओंना स्वरूप, कायर, गुणीतत्त्व अने माट आत्मनु भावुकतापालक वशमन प्राप्त थाय छे. वेदिक युगमा लोकिक संपति प्राप्त करी तेना द्वारा ऐडिक ज्ञवने सम०१६ बनाववानु लक्ष रहेतु, परंतु कमर पुनर्जन्मनी विचारधारा साथे पारलोडिक ज्ञवनी सम०१७ प्राप्त करवाणी अंभनाई असो उद्य पामे छे. आम, लोकिक संपति द्वारा निराशावाद तो पारलोडिक ज्ञवनी सम०१७ द्वारा आशा अने श्रद्धाली भवना विकसे छे. आशा-निराशाथी रंगायेतु ज्ञवनानु नवू दृष्टिकृत हाकार ले छे. परिणामे आ युगानु स्तोत्र साहित्य वेद युगानी दाशमिकताना संकेत लाई दशनना क्षेत्र नवीन सिद्धांतो साथे आगाम धपे छे. १ ऐतिहासिक ग्रन्थोमां रामायण अने महाभारतनो समावेश थाय छे.

वाल्मीकि रामायणमां स्तोत्रसाहित्य

'रामायण' साधिकाणी अवी रथना छे. जेमां पूवर्खवतीर वेदिक काव्यी वशमनामकताने स्थाने मनोभावोनु वित्रक्ष प्रवेशे छे. बहिमुखताने स्थाने आं तमुखता अने उत्तरवीर काव्यी गीतामकतानु प्राचीभिक रुप असां ज्ञवा माने छे.

अगत्यक्षणि द्वारा रामने उपटिष्ठ "आदित्य हृदय" स्तोत्र वाल्मीकि रामायणानु एक प्रसिद्ध स्तोत्र छ. तमां शक्तिन सूचक विभिन्न नामो द्वारा सूयर्णो महिमा गायो छे.

सूयर्ण भगवानना नाम, आठित्य, सविता, सूयर्ण, भग, पूषा, गबसितमान, सु वशमनसदश, डिरुप्यरेता, दिवाकर वगेरे नामांगी हारमणामां ज आ काव्य पूषर्ण थाय छे.

परमात्माना सहस्रनाम कल्पीने आराधनानी एक विशिष्ट पद्धति अस्तित्वमां आवी ने परिणामे "सहस्रनाम" स्तोत्र काव्य प्रकार बने छे. रामायणना "सीतासहस्रनाम स्तोत्र" मां राम सहस्र नामो द्वारा सीतानी शक्तिमता वशमन छे. सहस्र-नामावलिमा शब्दानुप्राप्तनु स्तोषियर काव्यत्वनी कोटिए पहांये छे.

महाभारतमां "सहस्रनाम स्तोत्र" नी परंपरामां बे प्रसिद्ध स्तोत्रो छे. (१) विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र (२) शिवसहस्रनाम स्तोत्र, विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र' सधन अने विपुल वैभवनी रथना छे. तेना प्रथेक नाममां दाशमिक विचार गूढायेलो छे. आ साथे आ स्तोत्रमां अदी अनुप्राप्त अलंकारानु पश वशमन करेल छे.

"शिवसहस्रनाम स्तोत्र"मां पश शिवज्ञा सहस्रनामोनु सरण शैवीमां आवेदन थयेतु ज्ञवा माने छे.

महाभारतना शांतिपवर्णनु एक ज्ञातीतु ११७ श्लोकोमां अथित "भीमराजसत्र" पश छे. तेमां बाष्पशीर्या पर सूतेला भीम पितामहे करेली क०७३ी सुति छे. क०७३ने वंदन करां कहे छे.

सहस्रनामोनी साथे-साथे परमात्माना आठ, दश के बार केटवा नामो द्वारा पश त्युति कीरी शक्य छे. आवा स्तोत्रोमां नाम संभ्यामो निदेशीशीषकमां थाय छे. जेम क महाभारतना अराध्य-पवर्णमां "श्रीक०७३ दादशनाम स्तोत्र"

सवर अंगोनी रक्षा ईष्टेवना विभिन्न श्वरुपो करे अवी आराधना पद्धतिमांथी "कवच स्तोत्र" निमार्प छे. संक्षेत्र साहित्यो आ एक लाक्षणिक स्तोत्र प्रकार छे. आ प्रकारना स्तोत्रनी शरुआत महाभारतना "राहुकवच"थी थाय छे. तेनु एक पद दशमीय छे.

आम, वेदिक स्तोत्रोमां न संभालातो आत्मनाद हवे महाभारतमां संभालाय छे. रामायण-महाभारतना स्तोत्र-काव्यो विकासशील देखाय छे. जेमां कवच स्तोत्र, सहस्रनाम स्तोत्र, नामसंभ्या-सूक्षक स्तोत्र वगेरे. शशांगति भाव ज्ञवा भीज अन्य भावो स्तोत्रना भाव सौदर्यमां उपकारक भनी रहे छे.

REFERENCES

- १ श्रीमद शंकरायायर विचित्र स्तोत्र-संग्रह, संस्कृत साहित्यवद्यक क्रायर्खलय, अमदाबाद, सतमी आवृत्ति २००४, ५०. ११५
- २ सं. डॉ. जीतमलाली पटेल, आठि शंकरायायर, समग्र ग्रंथावली भाग-१ स्तोत्र, पूर्वोङ्कत, ५०.३५
- ३ ऐज, ५०. २००
- ४ ऐज, ५०. २७१
- ५ देवी स्तोत्र रत्नाकर, जीतमलाली पटेल, गोरखपुर, सं.२०५४, त०१०४ पृष्ठ: मुख्य, ५०.५८
- ६ सं.डॉ. जीतमलाली पटेल, आठि शंकरायायर, समग्र ग्रंथावली भाग-१, स्तोत्र, उपरोक्त, ५०.३८